समय का पहिया घूमेगा..

क्या वृद्धाश्रम आवश्यक है ? चलिए इस प्रश्न का हल एक और प्रश्न से ढूंढते हैं। क्या बालआश्रम भी होने चाहिए, जहाँ वैसे माता-पिता जो समय, स्थान और आर्थिक अभाव से बच्चों का पालन पोषण करने में असमर्थ हों वो उन बच्चों को वहाँ छोड़ आयें। लेकिन यह अनुचित है क्योंकि बच्चों का पालन-पोषण करना माता-पिता का दायित्व है और बूढ़े माता-पिता की सेवा करना बच्चों का कर्तव्य है।

पश्चिमी देशों में वृद्धाश्रम प्रचलित विचारधारा है और जन समुदाय को स्वीकार्य भी है।लोग आजीवन अपनी संतान का स्नेहपूर्वक लालन-पालन करते है और अपनी सारी पूँजी उनकी शिक्षा और आवश्यकताओं को पूर्ण करने में न्योछावर कर देते हैं।लेकिन वृद्धावस्था में जब वे शारीरिक और आर्थिक दृष्टि से सक्रीय नहीं रह पाते तब बहुत से स्वार्थी बच्चें उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं।

अधिकांश व्यक्ति मूलतः सरल रास्ता चुनते है, इसलिए यदि वृद्धाश्रम व्यापक तौर पर प्रचलित हो गया तो इसका भीषण दुष्प्रभाव होगा। सक्षम संतान भी वृद्ध माता पिता को वहाँ दाखिल कर आएँगे। वे यह भूल जाते हैं कि कल वे भी बूढ़े होंगे। क्या वे अपने बुढ़ापे में अपने परिवार से दूर अपरिचितों के बीच रह पाएँगे? समय का चक्र घूमे और उनके बच्चे भी उनके साथ यही सूलूक करें तो क्या उन्हें बुरा नहीं लगेगा?

बुजुर्ग ही परिवार की नीव होते हैं और जीवन के अंतिम पड़ाव में उनका परित्याग करना अधर्म है। यही हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता भी है।

समय की यही ख़ास बात है, अपने कर्मों का फल, यहीं इस जन्म में भोगना होता है, केवल समय की ही बात है।

- पियूशी झा
- कक्षा- अष्टम्, वर्ग- बी